डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा गिरिजा कुमार माथुर जन्मशतवार्षिकी पर 'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक संगोष्ठी का प्रथम दिन

गिरिजा कुमार माथुर ने आधुनिकता को उचित संदर्भ में परिभाषित किया – विश्वनाथ त्रिपाठी

14 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली साहित्य अकादेमी द्वारा आज गिरिजा कुमार माथुर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात हिंदी आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि उन्होंने काव्य की सभी परंपराओं को तोड़ते हुए अपने वाक्य विधान पर विशेष ध्यान दिया। वे अनास्था के कवि नहीं थे और उन्होंने आधुनिकता को उचित संदर्भ में परिभाषित किया। वे अपनी कविता शब्दों से, लय से, छंद से तथा अन्य प्रतीकों को नए रूप में प्रस्तुत करके संभव करते हैं।

अपने आरंभिक वक्तव्य में हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में गीतात्मकता है। वे कविता में 'अनुभूति के ताप' को महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने गीतों को एक नया संस्कार दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य में विज्ञान लेखन की शुरुआत तो की ही बल्कि उपेक्षित विधा काव्य–नाटक आदि का सृजन भी किया।

अपने बीज वक्तव्य में अजय तिवारी ने उनकी कविता के तीन प्रमुख तत्त्वों – रोमांटिकता, प्रकृति सौंदर्य और यर्थाथवाद को विस्तार से व्याख्यायित किया। आगे उन्होंने कहा कि बिना रोमांटिक हुए प्रगतिवादी भी नहीं हुआ जा सकता। उनकी कविता एक – आयामी नहीं है बल्कि वे विभिन्न आयामों के कवि हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर 'लोकल' से लेकर 'ग्लोबल' तक के कवि हैं। उनकी बौद्धिक प्रखरता एवं सम्यक दृष्टि उनको एक बड़े कवि के रूप में प्रतिष्ठित करती है। उन्होंने हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए आकाशवाणी के माध्यम से कई नए प्रयोग किए।

इस अवसर पर *गिरिजा कुमार माथुर रचना–संचयन* (संपादक : पवन माथुर) का लोकार्पण भी किया गया। गिरिजा कुमार माथुर के पुत्र एवं इसके संपादक पवन माथुर ने कहा कि संभव है कि गिरिजा प्रसाद माथुर की सर्जना के बाहुल्य को देखते हुए इस संकलन में आपको कुछ कम सामग्री दिखे लेकिन मेरी कोशिश रही है कि उनके अचिन्हित लेखन को मैं इस संचयन में प्रस्तुत कर सकूँ। इस अवसर पर गिरिजा कुमार माथुर की बेटी बीना बंसल एवं उनके छोटे पुत्र अमिताभ माथुर भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में उद्घाटन सत्र के अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्रम् एवं पुस्तक भेंट कर अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की और दिनेश कुशवाह ('तार सप्तक' की पृष्ठभूमि) तथा आशीष त्रिपाठी ('तार सप्तक' के कवियों में गिरिजा कुमार माथुर की विशिष्टता) विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता सौमित्र मोहन ने की और वशिष्ठ अनूप ने गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में प्रयोगवाद और उनका गीतिकाव्य विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सौमित्र मोहन ने कहा कि उनके गीत तुकबंदी से मुक्त हैं। उनके काव्य की विवेचना उतनी व्यापकता से नहीं की गई जितनी की जानी चाहिए थी। उनकी सारी अभिव्यक्तियाँ युग के अनुकूल थीं और वे हमेशा नए के प्रति आकर्षित रहे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीन सत्र होंगे, जिसमें लीलाधर मंडलोई, साधना अग्रवाल, ब्रज श्रीवास्तव, मदन कश्यप, शरद दत्त, सुरेश ढींगरा, सत्यकाम, रवि भूषण, कौशलनाथ उपाध्याय एवं अमिताभ माथुर अपने विचार व्यक्त करेंगे।

(के. श्रीनिवासराव)

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा गिरिजा कुमार माथुर जन्मशतवार्षिकी पर 'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी संपन्न

गिरिजा कुमार माथुर अपनी आलोचना में प्रयोगशीलता और आधुनिकता को साथ–साथ लेकर चलते हैं – रवि भूषण

नई दिल्ली, 15 अक्तूबर 2019 साहित्य अकादेमी द्वारा गिरिजा कुमार माथुर जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर आयोजित की गई द्विदिवसीय संगोष्ठी 'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' के अंतिम दिन आज तीन सत्रों का आयोजन किया गया। आज के प्रथम सत्र की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने की और साधना अग्रवाल तथा ब्रज श्रीवास्तव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। ब्रज श्रीवास्तव ने 'गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में सामाजिक परिवेश और यथार्थ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनकी कविताओं में जो भी प्रयोग किए गए उनका लक्ष्य 'व्यापक सत्य' को सामने लाना था। उन्होंने अपनी कविताओं में यथार्थ और सौंदर्य का संतुलित समन्वय किया है। वे अपनी कविता में मौलिकता और अनुभव की सत्यता का सम्मान करते थे। हम उन्हें आधुनिक और नए भारत के स्वप्निल कवि के रूप में याद कर सकते हैं। उनका सामाजिक यथार्थ गहन परिवेश और रचना–प्रक्रिया की सघनता पर आधारित था। साधना अग्रवाल ने 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कविता और गिरिजा कुमार माथुर' विषय पर सबसे पहले 'तारसप्तक' की पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से बताते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गिरिजा कुमार माथुर की कविता के विभिन्न आयामों की विस्तृत चर्चा की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर ने मार्क्सवाद को भारतीय परिवेश में रोपकर देखा है। उन्होंने उनकी कविताओं में आए मुख्य प्रतीकों– आग, रोशनी, चाँदनी और दीपक का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे आग और रोशनी को जहाँ परिवर्तन के प्रतीक के रूप में देख रहे थे वहीं चाँदनी आशा के प्रतीक के रूप में थी। इस तरह उनकी कविताओं में सपनों को बचाने की आकुल पुकार को महसूस किया जा सकता है।

आज के दूसरे सत्र की अध्यक्षता शरद दत्त ने की और सुरेश ढींगरा एवं सत्यकाम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुरेश ढींगरा ने 'गिरिजा कुमार माथुर नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में' विषय पर कहा कि उनके नाटकों और एकांकियों में पौराणिक संदर्भ नहीं हैं बल्कि उन्होंने निकट इतिहास की घटनाओं को कथ्य के रूप में प्रयुक्त किया है। रेडियो की समय–सीमा को देखते हुए उन्होंने छोटे नाटक लिखे हैं लेकिन अपने कथ्य की व्यापकता में वे बड़े नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। उन्होंने अपने पात्रों को दैनिक बोलचाल की भाषा प्रदान की है, जो बेहद महत्त्वपूर्ण है। अतः हम उनके नाटकों को उनकी कविता से कमतर नहीं माप सकते। सत्यकाम ने 'गिरिजा कुमार माथुर : लेखकीय व्यक्तित्व के विविध आयाम' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका शृंगार मध्यवर्गीय व्यक्ति का है। वे कविता में निराला के बाद ध्वनि संगीत की परंपरा को प्रतिष्ठित करने वाले महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनके लेखकीय व्यक्तित्व पर रेडियो और दूरदर्शन की स्पष्ट छाया है। वे अपने सृजन में आध्यात्मिकता के बारे में बहुत संतुलित दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में शरद दत्त ने उनके समय में आकाशवाणी में काम कर रहे महत्त्वपूर्ण लेखकों का ज़िक्र करते हुए कहा कि गिरिजा कुमार माथुर ने आकाशवाणी को एक परिवार के रूप में रूपांतरित किया और लेखकों एवं आकाशवाणी के बीच सेतु का काम किया। उन्होंने उनके रेडियो नाटकों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की अपील भी की, जिससे उनकी नाट्य प्रक्रिया को बेहतर रूप में समझा जा सके और उनकी प्रस्तुतियाँ भी की जा सकें।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता रवि भूषण ने की और कौशलनाथ उपाध्याय एवं अमिताभ माथुर ने अपने विचार व्यक्त किए। कौशलनाथ उपाध्याय ने 'गिरिजा कुमार माथुर आलोचक के रूप में' विषय पर बोलते हुए कहा कि गिरिजा कुमार माथुर का आलोचक व्यक्तित्व उनकी कविता में आता रहा है। वे किसी भी रचना का मूल्यांकन किसी खाँचे में रखकर नहीं

करते हैं बल्कि वे उसके विश्लेषण के लिए एक 'नई राह' चुनते हैं जो एक आलोचक के रूप में उन्हें रामचंद्र शुक्ल के पास ले जाती है। वे अपनी आलोचना में किसी एक का पक्ष नहीं लेते हैं बल्कि वहाँ भी वे आधारभूत मूल्यों और तत्त्वों को खोजने–निकालने की कोशिश करते हैं। गिरिजा कुमार माथुर के पुत्र अमिताभ माथुर ने 'गिरिजा कुमार माथुर परिवार में' विषय पर बोलते हुए उनके पारिवारिक व्यक्तित्व का बहुत सुंदर चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उनकी कई रोचक आदतों का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे अपने परिवार को बेहद प्यार करते थे और बहुत व्यस्त रहते हुए भी सभी के लिए समय निकालते थे। उन्होंने देर रात तक लिखने, घर आए प्रत्येक व्यक्ति की मदद करने आदि के कई रोचक संस्मरण भी सुनाए। अपने अध्यक्षीय भाषण में रवि भूषण ने कहा कि उनके आलोचकीय व्यक्तित्व में उनके बचपन, प्रारंभिक शिक्षा एवं निराला तथा रामविलास शर्मा के सान्निध्य का बहुत बड़ा हाथ है। उनका 'नाद सौंदर्य' विचारणीय है और कविता जैसाकि उन्होंने खुद कहा है कि कविता जीवन के आलोक की वाणी हैं। एक आलोचक के रूप में उनकी दृष्टि निरंतर विकसित होती रही है। उनकी आलोचना का सामाजिक पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा वे अपनी आलोचना में प्रयोगशीलता और आधुनिकता को साथ–साथ लेकर चलते हैं। गिरिजा कुमार माथुर का मूल्यांकन व्यापक और नई दृष्टि के साथ किया जाना आवश्यक है।

कार्यक्रम में विभिन्न लेखक एवं साहित्य प्रेमी – सुरेश ऋतुपर्ण, रणजीत साहा, राजेंद्र उपाध्याय, द्वारिक प्रसाद चारुमित्र, विवेकानंद के अतिरिक्त गिरिजा कुमार माथुर के परिवार के सदस्य एवं विभिन्न विश्वविद्यालय के छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने किया।

के. श्रीनिवासराव